रामधारी सिंह

र दीर्घ उत्तरीय प्रकाः

हान में अस्म कब और क्यों आ जाता है? क्ष मनुष्य अपने द्वारा ही गई चीजो की हान ना मानकर दूसरों पर अहसान करना मान द्विता है तब उसमें अहम अपित अहंकार आ जाता हैं। वह बिना किसी लाम के अपि दूसरी की महर नरी करता ।

क्व में राम को जीवन का स्वामा करिए हैं । अपूर्ण कि र केसे सिर्ध किया है? मिन ने दान को 'जिनन का द्वा जा' करा है' क्योंकि जिस प्रकार दारना को इवस्ने से कीई नहीं रोक सकता उसी प्रकार राज से टम स्वयं को रीक नहीं सकते

पर जिनन भर चलने वाती प्रक्रिया है।

इ. दान की जीवन का प्रकृत वर्ष अभी क्या जाता है? प्रकृति की सभी चीको अपना सर्वस्व दूसरी प्र ल्योकाहर काती हैं। जिसे पेद , नदी आदि । सनि वे में प्रकृति से प्रेरणा लेते दुष्ट ही दान ही भी प्रकृत प्रभी माना हैं। ताम की द्वा किए बना हमें अगातार राम करना चारिए ।

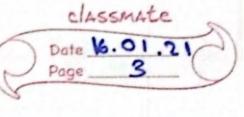
गा । अप अप क्रीविदर) क) एक रीत ती टर्न सार्व सम कुछ देना पहता के इस पति के भाव्यात्र से बते वह करना चारता के As कि यदि एक टाकी अपने जीवन में कुछ हा नरी करता हैं तो औ व्यक्ति के भरने के बार अपना शर कुछ त्रिट्टी में मिलाना ही पहेंग दें यर प्रकृति का नियम है। रे दहानियाँ स्टब्स्ट सम्ब और फिर नए नए इत आ पर्ग Ans ना बर्तम प्रकृति काफीनम हैं। नेपा एक दिन

बाने हमको यह समझान नाहते हैं कि परिवेतन

पु तना अनव्य टीता है। नए की मजबूत बनमे के लिए पुराने की भी सँमानकर रखना पढ़ता है

डानिनों के साम रहने पर ही उसने नएनए प्रमाएँग ।

क्रिया का प्रतिपादण अपने शाब्दे में लिशिए । 5) इस केविता में किव ने दान का मरलव बेताम Ans हैं। प्रकृति का कार्य - व्यापार वान - कन पर सनता है। यर इक स्वामाविक प्रक्रिया है। राज-में अपन औ हिन निरिप्त होता है । प्रकृति से स्वाधित क्ह जी जो के उराहरण सम ते सकते हैं जिले.



पेड़, बारता नदी अदि प्रकृति से शिखा तीते हुए मनुष्ण की और दान देने का पुष् कार्य करना चारि पर।

__



WEK PADRE		STD.: 3 SEC.: ROLL NO.: SUB.: HIOOI		
s.No.	16.04.21	Title	Page No.	Teacher's Sign / Remarks